कक्षा-10 महत्वपूर्ण जीवन-परिचय

ध्यान दीजिए - जीवन परिचय लिखते समय फ्लो चार्ट (संक्षिप्त परिचय) का प्रयोग करें, जिससे परीक्षक अधिक प्रभावित होते हैं।

यहाँ पर जितना आवश्यक है उतना ही जीवन परिचय दिया जा रहा है अतः विद्यार्थिगण सम्पूर्ण याद करें।

यहाँ पर 3 अंक जीवन परिचय के लिए एवं 2 अंक कृतियों के लिए कुल मिलाकर 5 अंक निर्धारित हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल

संक्षिप्त-परिचय

- जन्म- 1884 ई०
- जन्म स्थान- बस्ती जिले के अगोना ग्राम में।
- पिता - चन्द्रबली शुक्ल
- शिक्षा- एफ. ए. (इण्टरमीडिएट)
- आजीविका- अध्यापन, लेखन
- भाषा- शुद्ध साहित्यिक, सरल एवं व्यावहारिक भाषा
- शैली- वर्णनात्मक, विवेचात्मक, व्याख्यात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक तथा हास्य-व्यंगात्मक।
- मृत्यु- 1941 ई०
- कृतियाँ- चिन्तामणि, रसमीमांसा, त्रिवेणी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, तुलसी ग्रन्थावली, जायसी ग्रन्थावली, हिन्दी-शब्द सागर, नागरी प्रचारिण पत्रिका, आनन्द कादम्बिनी, भ्रमरगीत सार।

जीवन-परिचय- प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार एवं साहित्यकार इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म सन् 1884 ई० में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने हाई स्कूल की परीक्षा मिशन स्कूल मिर्जापुर से उत्तीर्ण की तथा इंटरमीडिएट की परीक्षा अंतिम वर्ष में ही छूट गई थी।

शुक्ल जी ने मिर्जापुर के न्यायालय में नौकरी कर ली किन्तु किसी कारण से छोड़ दी। बाद में मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गए। स्वाध्याय से इन्होंने हिंदी अंग्रेजी सस्कृत बंगला आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। पत्र-पत्रिकाओं में लिखना आरंभ कर दिया। बाद में इनकी नियुक्ति काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक पद पर हो गई। बाबू श्यामसुंदर दास के पश्चात आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। इसी पर पर कार्य करते हुए सन 1941 ई० में हिंदी साहित्य का यह आलोचक पंचतत्व में लीन हो गया।

Gyansindhu Coaching Classes

कृतित्व- आचार्य रामचंद्र शुक्ल मूर्धन्य आलोचक, श्रेष्ठ निबंधकार, निष्पक्ष इतिहासकार महान शैलीकार एवं युग प्रवर्तन आचार्य थे। इन्होने अनेक आलोचनाएँ लिखी इनकी विद्वता के कारण ही 'हिन्दी शब्द सागर' के संपादन कार्य में सहयोग के लिए इन्हें बुलाया गया। आलोचना इनका मुख्य एवं प्रिय विषय था। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिख कर इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया।

- निबंध संग्रह- चिंतामणि भाग 1 और 2, विचारवीथी
- इतिहास ग्रंथ- हिंदी साहित्य का इतिहास
- आलोचना ग्रंथ- सूरदास, रस मीमांसा, त्रिवेणी संपादन कार्य जायसी, ग्रन्थावली, तुलसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, हिन्दी शब्द सागर, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, आनंद कादंबिनी।
- कहानी- ग्यारह वर्ष का समय
- काव्य कृति-अभिमन्यु वध
- अन्यकृतियाँ-मेगास्थनीज का भारतवर्षीय विवरण, आदर्श जीवन, कल्याण का आनंद, विश्व प्रबंध, बुद्धचरित (काव्य) आदि प्रमुख हैं।

*****

2. जयशंकर प्रसाद

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- 30 जनवरी 1889
- जन्म स्थान- काशी (उत्तर प्रदेश)
- पिता - देवी प्रसाद
- भाषा- शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली
- शैली- समीक्षात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक शैली
- मृत्यु- सन् 1937 ई०
- प्रमुख कृतियाँ- चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, तितली, इन्द्रजाल,

Gyansindhu Coaching Classes

जीवन-परिचय-

छायावाद के कवि चतुष्ट्य में अग्रणी महाकवि जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी सन् 1889 ई० में काशी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहू' नामक परिवार में हुआ था। जयशंकर प्रसाद जी के पिता श्री देवी प्रसाद और पितामह श्री शिवरत्न साहू' थे। इनके बड़े भाई का नाम शंभूनाथ था।

इनके माता-पिता के मृत्यु के बाद शंभू जी ने ही इनकी पढ़ाई का प्रबंध किया। सर्वप्रथम क्वींस कॉलेज में प्रवेश लिया इनका मन वहाँ नहीं लगा तो घर पर ही अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे।

प्रसाद जी 17 वर्ष के थे तभी शंभूनाथ जी की मृत्यु हो गई। इन्होने तीन शादियाँ की और तीनों ही पत्नियों की असमय में मृत्यु हो गई। थोड़े दिनों बाद उनके छोटे भाई की भी मृत्यु हो गई जिस कारण प्रसाद जी अंदर ही अंदर टूट गए। इसी दुःख में डूबे हुए क्षय-रोग से ग्रस्त होकर सन् 1937 ई० में पंचतत्व में विलीन हो गए।

प्रमुख रचनाएँ- प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि थे। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

- चन्द्रगुप्त
- स्कन्दगुप्त
- कंकाल
- तितली
- इरावती (अपूर्ण)
- आँधी
- आकाशद्वीप
- इन्द्रजाल
- अजातशत्रु
- आकाशदीप
- झरना
- लहर
- आँसू
- कामायनी
- झरना
- प्रेम-पथिक

*****

3. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- 27 मई, 1894 ई०।
- जन्म स्थान- खैरागढ़ (जबलपुर)
- पिता - पुन्नालाल बख्शी
- भाषा- शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली
- शैली- समीक्षात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक शैली
- मृत्यु- 27 दिसम्बर सन् 1971 ई०।
- कृतियाँ प्रबन्ध पारिजात, पंचपात्र, पद्मवन, मकरन्द बिन्दु, झलमला, नवरात्र, शतदल, पंचरात्र, भोला आदि।

Gyansingh Coaching Classes

जीवन-परिचय-

बख्शी जी का जन्म 27 मई, 1894 ई में जबलपुर के खैरागढ़ नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम पुन्नालाल बख्शी तथा बाबा का नाम उमराव बख्शी साहित्य प्रेमी और कवि थे। इनकी माता को भी साहित्य से प्रेम था। परिवार के साहित्यिक वातावरण के प्रभाव के कारण ये विद्यार्थी जीवन से ही कविताएँ रचते थे। बी० ए० पास करते ही इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका में अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराना प्रारम्भ किया। बाद में 'सरस्वती' पत्रिका के अतिरिक्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं।

बख्शीजी ने 1920 ई० से 1927 ई० तक बड़ी कुशलता से 'सरस्वती' का सम्पादन किया। कुछ वर्षो तक इन्होंने 'छाया' मासिक पत्रिका का भी सम्पादन बड़ी योग्यता से किया। इन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा १९४९ में साहित्य वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया। साहित्य का यह महान् साधक 27 दिसम्बर, 1971 ई० में परलोकवासी हो गया।

प्रमुख रचनाएँ- बख्शी जी की कृतियों का विवरण इस प्रकार है-

- निबन्ध संग्रह-'प्रबन्ध पारिजात', 'पंचपात्र', पद्मवन', 'मकरन्द बिन्दु', 'कुछ बिखरे पन्ने', 'मेरा देश' आदि।
- कहानी-संग्रह-'झलमता', 'अंजलि'।

- आलोचना-'विश्व साहित्य', 'हिन्दी साहित्य विमर्श', 'साहित्य शिक्षा', 'हिन्दी उपन्यास साहित्य', 'हिन्दी कहानी साहित्य', विश्व साहित्य, 'समस्या और समाधान, पंचपात्र, पंचरात्र, नवरात्र, यदि मैं लिखता।
- काव्य-संग्रह-'शतदल', 'अश्रुदल',
- उपन्यास- कथाचक्र, भोला, (बाल उपन्यास) वे दिन, (बाल उपन्यास)।
- आत्मकथा- संस्मरण-मेरी अपनी कथा, जिन्हें नहीं भूलूँगा।

*****

4. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

Gyansindhu Coaching Classes

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- 3 दिसम्बर, 1884 ई०
- जन्म स्थान- जीरादेई (छपरा बिहार)
- पिता - महादेव सहाय
- माता - कमलेश्वरी देवी
- शिक्षा- कोलकाता यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में पोस्ट ग्रेजुएट, लॉ में पोस्ट ग्रेजुएशन एवं लॉ में डॉक्ट्रेट
- भाषा- सरल, सुबोध और व्यवहारिक खड़ी बोली।
- मृत्यु- 28 फरवरी 1963
- कृतियाँ- भारतीय शिक्षा, गाँधी जी की देन, शिक्षा और संस्कृति, मेरी आत्मकथा, बापू जी के कदमों में, मेरी यूरोप यात्रा, संस्कृति का अध्ययन आदि।

जीवन परिचय-

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी का जन्म सन् 1884 ई० में बिहार के छपरा जिले के जीरादेई नामक ग्राम में हुआ था। राजेन्द्र प्रसाद जी बड़े मेधावी छात्र थे। प्रत्येक क्लास में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० किया तथा मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज मे अध्यापन कार्य करने लगे। पटना एवं कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत कार्य भी किया। भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस के तीन बार अध्यक्ष भी चुने गए। सन 1962 ई० तक भारत के राष्ट्रपति पद को अलंकृत किया। सन् 1962 ई० में राजेन्द्र बाबू को सर्वोच्च पुरस्कार भारत

रत्न से अलंकृत किया गया। सन् 1963 ई० में राजेन्द्र बाबू इस असार संसार को त्याग कर चले गये।

कृतियाँ– नागरी प्रचारिणी सभा एवं 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचाार सभा' के माध्यम से हिन्दी को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

- भारतीय शिक्षा
- गाँधी जी की देन
- शिक्षा और संस्कृति
- मेरी आत्मकथा
- बापू जी के कदमों में
- मेरी यूरोप रात्रा
- संस्कृति का अध्ययन
- खादी का अर्थशास्त्र
- चम्पारण में महात्मा गाँधी

*****

Gyansindhu Coaching Classes

हिन्दी काव्य खण्ड में संकलित प्रमुख महत्वपूर्ण कवियों का जीवन परिचय

ध्यान दीजिए– जीवन परिचय लिखते समय फ्लो चार्ट (संक्षिप्त परिचय) का प्रयोग करें, जिससे परीक्षक अधिक प्रभावित होते हैं। यहाँ पर जितना आवश्यक है उतना ही जीवन परिचय दिया जा रहा है अतः विद्यार्थिगण सम्पूर्ण याद करें। यहाँ पर 3 अंक जीवन परिचय के लिए एवं 2 अंक कृतियों के लिए कुल मिलाकर 5 अंक निर्धारित हैं।

1. सूरदास

संक्षिप्त परिचय

- जन्म– सन् 1478 ई०।
- जन्म स्थान– रूनकता।
- पिता – रामदास सारस्वत।
- प्रमुख रचनाएँ– सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली।
- भाषा– ब्रज।
- शैली– मुक्तक शैली के गेयपद।

- विशेष- अष्टछाप के जहाज एवं भक्तिकाल के कवि
- मृत्यु- सन् 1583 ई०।
- साहित्य में स्थान- कृष्णभक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान तथा वात्सल्य रस के पुरोधा।

जीवन-परिचय-

महाकवि सूरदास का जन्म 'रूनकता' नामक ग्राम में सन् 1478 ई० में पं० रामदास के घर मे हुआ था। पं० रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् 'सीही' नामक स्थान को सूरदास का जन्मस्थल मानते हैं।

सूरदासजी जन्मान्ध थे या नहीं, इस सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बाल मनोवृत्तियों एवं मानव-स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास ने किया है, वैसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भवतः बाद में अन्धे हुए होंगे।

Gyan Sindhu Coaching Classes

सूरदास जी श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे। वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे। सूरदास का विवाह भी हुआ था। विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहा करते थे। पहले वे दीनता के पद गाया करते थे, किन्तु वल्लभाचार्य जी के सम्पर्क में आने के बाद वे कृष्णलीला का गान करने लगे। कहा जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदासजी से तुलसी की भेंद हुई थी और धीरे-धीरे दोनों में प्रेम-भाव बढ़ गया था। सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'कृष्णगीतावली' की रचना की थी। सूरदाजी की मृत्यु सन् 1583 ई० में गोवर्धन के पास' पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी। मृत्यु के समय महाप्रभु वल्लभाचार्य के सुपुत्र विठ्ठलनाथजी वहाँ उपस्थित थे।

प्रमुख रचनाएँ- कृष्ण भक्ति काव्यधारा के भक्त शिरोमणि सूरदास ने लगभग सवा लाख पदों की रचना की थी। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की खोज तथा पुस्तकालय में सुरक्षित नामावली के अनुसार सूरदास के ग्रन्थों की संख्या 25 मानी जाती है, किन्तु उनके तीन ग्रन्थ ही उपलब्ध हुए हैं-

1. सूरसागर-'सूरसागर' सूरदास की एकमात्र प्रामाणिक कृति है। इसके सवा लाख पदों में से केवल 8-10 हजार पद ही उपलब्ध हो पाए हैं। सम्पूर्ण 'सूरसागर' एक गीतिकाव्य है।
2. सूरसारावली-यह ग्रन्थ अभी तक विवादास्पद स्थिति में है, 1107 छन्द हैं।

3. साहित्य-लहरी-"साहित्य-लहरी' में सूरदास के 118 पदों का संग्रह है। इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं-कहीं पर श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन तथा एक-दो स्थलों पर महाभारत की कथा के अंशों की भी झलक है।

भाषा-शैली-सूरदास मुक्तक शैली के गेय पद लिखते थे, भाषा ब्रज थी।

*****

2. तुलसीदास

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- संवत् 1554 वि० (सन् 1532 ई०)
- जन्म स्थान- राजापुर गाँव (चित्रकूट)
- पिता - आत्माराम दुबे
- माता- हुलसी
- बचपन का नाम- रामबोला
- भाषा- अवधी तथा ब्रज
- शैली- छप्पय, दोहा, चौपाई, कवित, सवैया, आदि।
- मृत्यु- संवत् 1680 वि० (सन् 1623 ई०)
- प्रमुख कृतियाँ- रामचरितमानस, जानकी, मंगल, दोहावली, गीतावली, पार्वती मंगल, रामलला-नहछू, रामाज्ञा प्रश्न आदि।

Gyansindhu Coaching Classes

जीवन-परिचय-

तुलसीदास जी के जन्म व स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। मूल गोसाईं चरित एवं तुलसी-चरित में इनका जन्मस्थान राजापुर बताया गया है। अन्य कुछ विद्वान 'सोरों' नामक स्थान पर जन्में बताते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसाार भी इनका जन्म राजापुर में ही माना जाता है। जन्म संवत् 1554 वि० (सन् 1532 ई०) में बताया जाता है, और यही सर्वाधिक प्रचलित है।

पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। जन्म के सम्बन्ध में एक दोहा प्रचलित है-

"पन्द्रह सौ चौवन विसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‌यो शरीर।।"

बचपन का नाम 'रामबोला' था। जन्मे तो दाँत भी थे और मुँह से राम निकला था। राक्षस समझकर इनके पिता ने त्याग दिया तो एक दासी ने इनको पाला तथा बाबा नरहरिदास ने

अपना शिष्य बनाया। इनका विवाह रत्नावली से हुआ था परन्तु उससे विरक्त हो गए। काशी में शेष सनातन से वेद-वेदांगों की शिक्षा ली। फिर राम के चरित्र का गायन करने लगे और रामचरित मानस की रचना की। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में बीता। मृत्यु के सम्बन्ध में भी एक दोहा प्रसिद्ध है-

"संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला तीज सनि, तुलसी तज्यो शरीर।।"

प्रमुख कृतियाँ- तुलसी दास जी की 12 प्रामाणिक रचनाएँ मानी जाती है-

1. पार्वती मंगल
2. जानकी मंगल
3. वैराग्य संदीपनी
4. बरवै रामायण
5. रामाज्ञा प्रश्न
6. कवितावली
7. कृष्ण गीतावली
8. गीतावली
9. रामचरित मानस
10. दोहावली
11. विनय पत्रिका
12. रामलला नहछू

Gyansindhu Coaching Classes

*****

3. रसखान

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- सन् 1533 ई०।
- जन्म स्थान- दिल्ली।
- गुरू - गुसाईं विट्ठलनाथ।
- रस - भक्ति, श्रृंगार।
- वास्तविक नाम- सैयद इब्राहीम।
- भाषा- ब्रज।
- शैली- मुक्तक, सरल एवं परिमार्जित।
- मृत्यु- सन् 1618 ई० में
- कृतियाँ- 'सुजान रसखान', प्रेमवाटिका, 'बाल लीला', 'अष्टयाम'।

Gyansindhu Coaching Classes

जीवन परिचय-

रसखान का जन्म सन् 1533 ई० में दिल्ली में हुआ था। इनका वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था। ये दिल्ली के पठान सरदार कहे जाते थे। कुछ विद्वान इन्हें पिहानी का निवासी मानते हैं। रसखान किसी बादशाह के वंशज थे। 'प्रेमवाटिका' में उन्होने स्वयं वर्णित किया है।

इनके जन्म एवं स्थान के सम्बन्ध में मतभेद हैं। ये गुसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य थे। लगभग 1618 ई० के आस-पास इनकी मृत्यु हो गयी थी। रसखान सगुण काव्यधारा के कृष्ण भक्ति शाखा के कति माने जाते हैं। ये बड़े प्रेमी व्यक्ति थे। भगवान कृष्ण के प्रति अलौकिक प्रेम था।

रसखान की भाषा ब्रज थी। शैली मधुर एवं सरस है। विभिन्न अलंकारों के प्रयोग से भाषा में चमत्कार प्रदर्शन हुआ है।

कृतियाँ-

इनकी दो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं- 'सुजान रसखान' एवं 'प्रेमवाटिका'। सुजान रसखान सवैया छन्दों में रचित है।

*****

4. बिहारी लाल

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- 1603 ई०
- जन्म स्थान- बसुआ (गोविन्द गाँव)
- पिता - पं० केशवराय चौबे ग्वालियर में
- आश्रयदाता- राजा जयसिंह का दरबार
- शिक्षा- ग्वालियर में
- रचना- बिहारी सतसई
- भाषा- ब्रज भाषा
- शैली- मुक्तक (समास शैली)
- मृत्यु- 1663 ई०।

Gyansindhu Coaching Classes

जीवन-परिचय-

रीतिसिद्ध कवि बिहारी का जन्म सन् 1603 ई० में ग्वालियर के निकट 'बसुआ गोविंदपुर' नामक गाँव में हुआ था। बिहारी लाल जी मथुरा के चौबे थे। पिता का नाम 'केशवराय चौबे' था। आठ वर्ष की अवस्था में इनके पिता इन्हे अपने साथ ओरछा (बुन्देलखण्ड) ले गये। इनके गुरू आचार्य केशवदास थे।

बिहारी का बचपन ओरछा में बीता। युवावस्था में ये अपनी ससुराल मथुरा जाकर रहने लगे थे किन्तु ससुराल में उचित सम्मान न मिलने के कारण ये वहाँ से कन्नौज के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबार में चले गये। इस सम्बंध में निम्नलिखित दोहा प्रचलित है।

"जन्म ग्वालियर जानिए, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर, मथुरा बसि ससुराल।।"

मिर्जा जयसिंह के दरबार में इन्हे पर्याप्त सम्मान मिला। कहते हैं कि उस समय राजा अपनी छोटी रानी के प्रेमपाश मे फँसे हुए थे। वे राजकाज की सब चिन्ता

छोड़ कर हर समय महल में पड़े रहते थे। तब बिहारी ने राजा के पास एक दोहा लिखकर भेजा-

"नहि पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं विंध्यो, आगे कौन हवाल।"

इस एक ही दोहे ने राजा की आँखें खोल दीं। वे ठीक से राज्य की देखभाल करने लगे। दरबारी जीवन में बिहारी को बहुत सम्मन मिला। कहा जाता है कि राजा जयसिंह बिहारी को प्रत्येक दोहे की रचना पर एक स्वर्ण मुद्रा पुरस्कार में देते थे। हिन्दी को बिहारी सतसई जैसा अमूल्य रत्न समर्पित कर सन् 1663 ई० में बिहारी लाल जी पंचतत्व में लीन हो गये।

कृतियाँ-

बिहारीलाल जी की एक मात्र रचना- "बिहारी-सतसई" है। जिसमें 719 छन्द हैं। जिसमें 713 दोहे तथा 6 सोरठा संकलित हैं। यह बृज भाषा में रचित है।

*****

Gyansindhu Coaching Classes

5. सुमित्रानन्दन पन्त

संक्षिप्त परिचय-

- जन्म- 20 मई 1900 ई०
- जन्म स्थान- अल्मोड़ा जिले के कौसानी ग्राम में।
- पिता का नाम- गंगादत्त पन्त
- माता का नाम- सरस्वती देवी
- पालन पोषण- बुआ के द्वारा
- वास्तविक नाम- गुसाईदत्त।
- भाषा- सरल, सरस, तथा सुकोमल, खड़ीबोली।
- शैली- चित्रमय, संगीतात्मक, मुक्तक।
- मृत्यु- 28 दिसम्बर, 1977 ई०।

जीवन-परिचय-

प्रकृति के सुकुमार कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त जी का जन्म 20 मई, सन् 1900 ई में अल्मोड़ा जिले के 'कौसानी' नामक गाँव में हुआ था। इनके

पिता पं० गंगादत्त पन्त धार्मिक ब्राह्मण थे। वे कौसानी राज्य के कोषाध्यक्ष तथा अच्छे जमींदार थे। जन्म के छः घण्टे बाद ही इनकी माता सरस्वती देवी का देहान्त हो गया था, इस कारण इनका पालन-पोषण इनकी बुआ ने किया । पन्त जी की प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई।

पन्त जी को कविता में बचपन से ही विशेष रूचि थी। उत्तर प्रदेश सरकार ने चिदम्बरा पर इन्हे एक लाख रूपये के भारतीय ज्ञान पीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। पन्त जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की लम्बे समय तक सेवा की। कुछ दिन आकाशवाणी में भी काम किया । भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण' से भी अलंकृत किया था। सन् 1977 ई० में सरस्वती माता के इस लाल का स्वर्गवास हो गया।

कृतियाँ-

वीणा, ग्रन्थि, पल्लविनी, चिदम्बरा, लोकायतन, शिल्पी, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या।

*****

Gyansindhu Coaching Classes

6. महादेवी वर्मा

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- वर्ष 1907 ई०
- जन्म स्थान-फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)
- पिता का नाम-श्री गोबिन्दसहाय वर्मा
- माता का नाम-श्रीमती हेमरानी
- उपलब्धियाँ-महिला विद्यापीठ की प्राचार्य, पद्मभूषण पुरस्कार, सेकसरिया तथा मंगलाप्रसाद पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कार तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।
- कृतियाँ- नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य-गीत, दीपशिखा
- भाषा- खड़ी बोली व ब्रज भाषा
- शैली-मुक्तक, चित्र, प्रगीत

जीवन परिचय-

आधुनिक युग की मीरा तथा वेदना की साकार मूर्ति सुश्री महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में 'फर्रूखाबाद' नगर में होली के दिन

हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा एक अच्छे विद्वान थे। इनकी माता 'हेमरानी' भी अच्छी विदुषी थीं। केवल 9 वर्ष की अवस्था में ही इनका विवाह रूपनारायण सिंह के साथ हो गया। विवाह के बाद एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त की, संगीत और चित्रकला में इनकी विशेष रूचि थी। आप प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या रहीं तथा उपकुलपति पद पर भी आसीन रहीं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इन्हें विधान परिषद् की सदस्या नियुक्त कर सम्मानित किया। भारत के राष्ट्रपति ने इन्हे 'पद्मश्री' की उपाधि से सुशोभित किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इन्हे 'नीरजा' पर 500 रू० का 'सेक्सरिया' पुरस्कार तथा 'यामा' पर 1200 रू० का 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक देकर सम्मानित किया। पति द्वारा परित्यक्ता होने के कारण इनका जीवन वेदनामय रहा। इनके साहित्य में भी उसी वेदना की टीस है। इन्होंने 'चाँद नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया। इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। 11 सितम्बर 1987 ई० को महादेवी जी का स्वर्गवास हो गया।

Gyansindhu Coaching Classes

कृतियाँ–

'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', और 'यामा' हैं।

*****

7. सुभद्रा कुमारी चौहान

संक्षिप्त परिचय

- जन्म– 16 अगस्त वर्ष 1904
- जन्म स्थान– इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
- पिता – रामनाथ सिंह
- पति– लक्ष्मण सिंह चौहान
- शिक्षा– क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की छात्रा, देश सेवा में लग जाने के कारण शिक्षा अधूरी
- प्रमुख रचनाएँ–मुकुल, त्रिधारा, बिखरे मोती इत्यादि।
- भाषा– सरस सरल और खड़ीबोली।
- शैली– संगीतात्मक ओजयुक्त
- मृत्यु– वर्ष 1948

जीवन-परिचय-

स्वतन्त्रता संग्राम की सक्रिय सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका एवं वीर रस की एकमात्र कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म वर्ष 1904 ई० में इलाहाबाद के 'निहालपुर' मुहल्ले के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री रामनाथ एक विद्वान थे। सुभद्रा जी ने प्रायाग के 'क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में शिक्षा प्राप्त की। 15 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह खण्डवा के ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के पश्चात सुभद्रा जी ने वाराणसी के थियासोफिकल स्कूल में प्रवेश लिया किन्तु कुछ ही समय पश्चात गाँधी जी की प्रेरणा से ये पढ़ाई-लिखाई छोड़कर देश सेवा में सक्रिय हो गईं तथा राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने लगीं। इन्होंने कई बार जेल-यात्राएँ भी कीं। माखनलाल चतुर्वेदी की प्रेरणा से इनकी देशभक्ति का रंग और भी गहरा हो गया। सुभद्रा जी मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं। 12 फरवरी 1948 में एक मोटर दुर्घटना में इनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

कृतियाँ-

झाँसी की रानी, वीरों का कैसा हो वसन्त, मुकुल, बिखरे मोती, त्रिधारा, सभा का खेल, उन्मादिनी, तथा सीधे-सादे चित्र

*****

8. माखनलाल चतुर्वेदी

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- 4 अपैल, सन् 1889 ई०।
- जन्म स्थान- बाबई (होशंगाबाद), म० प्र०।
- पिता - पं० नन्दलाल चतुर्वेदी।
- सम्पादन- प्रभा, कर्मवीर (पत्र)
- प्रमुख रचनाएँ-रामनवमी, समर्पण, माता, युचरण, साहित्य-देवता, हिमतरंगिणी, वेणु लो गूंजे धरा।
- भाषा- सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली।
- शैली- मुक्तक, ओजपूर्ण, भावात्मक
- मृत्यु- 30 जनवरी, सन् 1968 ई०

जीवन-परिचय-

Gyansindhu Coaching Classes

श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जनपद में 'बावई' नामक गाँव में सन् 1889 ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नन्दलाल चतुर्वेदी थां गाँव की पाठशाला मे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर घर पर ही संस्कृत, गुजराती, बंगला और अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन किया। कुछ दिन अध्यापक रहे। सन् 1913 ई० में इन्हें 'प्रभा' नाम की प्रसिद्ध पत्रिका का सम्पादक नियुक्त किया गया।

देशप्रेम की भावना इनके हृदय में कूट-कूट कर भरी थी। गणेश शंकर विद्यार्थी का सम्पर्क मिला तो उनसे प्रेरणा प्राप्त कर ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। कई बार जेलयात्रा भी की। भारत और भारतीय संस्कृति से इन्हें असीम प्रेम था जिसकी झलक इनके सम्पूर्ण काव्य में दिखाई पड़ती है। इसी कारण इन्हें एक भारतीय आत्मा, नाम से पुकारा जाता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। सागर विश्वविद्यालय ने इन्हे डी-लिट्० तथा भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। सन् 1968 ई० मे इनका परलोकवास हो गया।

Gyansindhu Coaching Classes

कृतियाँ-

हिमतरंगिणी, रामनवमी, युगचरण, समर्पण, हिम-किराटिनी, तथा वेणु लो गूँजे धरा।

*****

9. अशोक वाजपेयी

संक्षिप्त परिचय

- जन्म- 16 जनवरी, 1941 ई०
- जन्म स्थान- दुर्ग (सागर) मध्य प्रदेश
- शिक्षा- सागर विश्वविद्यालय से बी. ए. तथा
  सेण्ट स्टीवेन्स कॉलेज दिल्ली से अंग्रेजी में एम. ए.
- कृतिया-साहित्य अकादमी पुरस्कार,
  दयावती कवि शेखर सम्मान,
  और कबीर सम्मान आदि से सम्मानित किया गया।

जीवन परिचय–

हिन्दी साहित्याकाश के अप्रतिम नक्षत्र श्री अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी, 1941 ई० को दुर्ग मध्य प्रदेश के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा सागर में प्राप्त की। सन् 1960 ई० में आपने सागर विश्वविद्यालय से ही बी०ए० की उपाधि प्राप्त की। तदुपरान्त सन् 1963 में दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० किया और यहीं दयालसिंह कॉलज में प्राध्यापक पद पर नियुक्ति प्राप्त की। दो वर्षो तक आपने यहाँ अध्यापन कार्य बड़ी ही निष्ठा से किया। इसके बाद आपने आई० ए० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा मध्य प्रदेश शासन भोपाल में विशेष सचिव, संस्कृति एवं प्रकाशन विभाग में नियुक्त किया गया। इसी पद पर रहते हुए आपने अनेक वर्षो तक 'पूर्वाग्रह', समास, बहुवचन आदि पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया। वाजपेयी जी सन् 1959 ई० से निरन्तर हिन्दी साहित्य साधना में रत हैं। हिन्दी जगत को आपसे भारी अपेक्षाएँ हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

कृतियाँ–

शहर अब भी सम्भावना हैं, 'एक पतंग अनन्त में', 'आविन्यो', कहीं नहीं वहीं', 'उम्मीदों का दूसरा नाम', 'कुछ रफू कुछ थिगड़े, दुःख चिट्ठीरसा, अपनी आसन्नप्रसवा माँ के लिए, विदा, वे बच्चे, युवा जंगल, शरण्य, शेष, सद्यस्नाता आदि।